ॐ सांई राम!!!

**श्री दासगणु महाराज कृत**

**श्री सांईनाथ स्तवन मंजरी्**

*हिन्दी अनुगायन*

*ठाकुर भूपति सिंह*

**॥ॐ श्री गणेशाय नमः॥**

**॥ॐ श्री सांईनाथाय नमः॥**

मयूरेश्वर जय सर्वाधार। सर्व साक्षी हे गौरिकुमार।
अचिन्त्य सरूप हे लंबोदर। रक्षा करो ममएसिद्धेश्वर॥1॥

सकल गुणों का तूं है स्वामी। गण्पति तूं है अन्तरयामी।
अखिल शास्त्र गाते तव महिमा। भालचन्द्र मंगल गज वदना॥2॥

माँ शारदे वाग विलासनी। शब्द.स्रष्टि की अखिल स्वामिनी।
जगज्जननी तव शक्ति अपार। तुझसे अखिल जगत व्यवहार॥3॥

कवियों की तूं शक्ति प्रदात्री। सारे जग की भूषण दात्री।
तेरे चरणों के हम बंदे। नमो नमो माता जगदम्बे॥4॥

पूर्ण ब्रह्म हे सन्त सहारे। पंढ़रीनाथ रूप तुम धारे।
करूणासिंधु जय दयानिधान। पांढुरंग नरसिंह भगवान॥5॥

सारे जग का सूत्रधार तूं। इस संस्रति का सुराधार तूं।
करते शास्त्र तुम्हारा चिंतन। तत् स्वरूप में रमते निशदिन॥6॥

जो केवल पोथी के ज्ञानी । नहीं पाते तुझको वे प्राणी।
बुद्धिहीन प्रगटाये वाणी। व्यर्थ विवाद करें अज्ञानी॥7॥

तुझको जानते सच्चे संत। पाये नहीं कोई भी अंत।
पद.पंकज में विनत प्रणाम। जयति.जयति शिरडी घनश्याम॥8॥

पंचवक्त्र शिवशंकर जय हो। प्रलयंकर अभ्यंकर जय हो।
जय नीलकण्ठ हे दिगंबर। पशुपतिनाठ के प्रणव स्वरा॥9॥

ह्रदय से जपता जो तव नाम। उसके होते पूर्ण सब काम।
सांई नाम महा सुखदाई। महिमा व्यापक जग में छाई॥10॥

पदारविन्द में करूं प्रणाम। स्तोत्र लिखूं प्रभु तेरे नाम।
आशीष वर्षा करो नाथ हे । जगतपति हे भोलेनाथ हे॥11॥

दत्तात्रेय को करूं प्रणाम। विष्णु नारायण जो सुखधाम।
तुकाराम से सन्तजनों को। प्रणाम शत शत भक्तजनों को॥12॥

जयति.जयति जय जय सांई नाथ हे। रक्षक तूं ही दीनदयाल हे।
मुझको कर दो प्रभु सनाथ। शरणागत हूं तेरे द्वार हे॥13॥

तूं है पूर्ण ब्रह्म भगवान। विष्णु पुरूषोत्तम तूं सुखधाम।
उमापति शिव तूं निष्काम। था दहन किया नाथ ने काम॥14॥

नराकार तूं तूं है परमेश्वर। ज्ञान.गगन का अहो दिवाकर।
दयासिंधु तूं करूणा.आकर। दलन.रोग भव.मूल सुधाकर॥15॥

निर्धन जन का चिन्तामणि तूं। भक्त.काज हित सुरसुरि जम तूं।
भवसागर हित नौका तूं है। निराश्रितों का आश्रय तूं है॥16॥

जग.कारण तूं आदि विधाता। विमलभाव चैतन्य प्रदाता।
दीनबंधु करूणानिधि ताता। क्रीङा तेरी अदभुत दाता॥17॥

तूं है अजन्मा जग निर्माता। तूं मृत्युंजय काल.विजेता।
एक मात्र तूं ज्ञेय.तत्व है। सत्य.शोध से रहे प्राप्य है॥18॥

जो अज्ञानी जग के वासी। जन्म.मरण कारा.ग्रहवासी।
जन्म.मरण के आप पार है। विभु निरंजन जगदाधार है॥19॥

निर्झर से जल जैसा आये। पूर्वकाल से रहा समाये।
स्वयं उमंगित होकर आये। जिसने खुद है स्त्रोत बहायें॥20॥

जय सांई राम!!!